Toppersnotes®
Unleash the topper in you

RAS

राजस्थान प्रशासनिक सेवा

राजस्थान लोक सेवा आयोग

भाग - 2

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

RAS

राजस्थान की कला एवं संस्कृति

क्र.सं.	अध्याय नाम	पृष्ठ सं.
1.	राजस्थान की चित्रकला	1
2.	राजस्थान के हस्तशिल्प	12
3.	राजस्थानी भाषा और बोलियाँ	18
4.	राजस्थान के लोकगीत और वाद्य यंत्र	22
5.	राजस्थान के लोक नृत्य	35
6.	राजस्थानी लोकनाट्य	40
7.	राजस्थान का साहित्य	44
8.	राजस्थान के संत और लोक देवता	53
9.	राजस्थान के मेले और त्यौहार	66
10.	राजस्थान के आभूषण और वेशभूषा	80
11.	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	83
12.	राजस्थान के प्रमुख रीति-रिवाज एवं प्रथाएँ	102

4 CHAPTER राजस्थान के संत और लोक देवता

पिछले वर्ष के प्रश्नवर्ष

प्रश्न.1 निम्न में से कौन सा युग्म गलत मेलित है? (2023)

(1) रामदेवजी- रामदेवरा
(2) मल्लीनाथजी - गागरोण
(3) तेजाजी – खड़नाल
(4) पाबूजी - कोलू
(5) अनुत्तरित प्रश्न

प्रश्न.2 बखनाजी, संतदास जी जगन्नाथ दास और माधोदास नामक संतों का संबंध निम्नलिखित में से किस सम्प्रदाय के साथ था? (2021)

(1) दादूपंथ (2) लालदासी सम्प्रदाय
(3) जसनाथी सम्प्रदाय (4) रामस्नेही सम्प्रदाय

प्रश्न.3 नारी संत दयाबाई शिष्या थी (2018)

(1) संत चरणदास की (2) संत निम्बार्काचार्य की
(3) संत रैदास की (4) संत रामचरण की

विश्लेषण - पूछे गए प्रश्नों में संतों का विशेष क्षेत्रों और संप्रदायों से संबंध मुख्य बिंदु है। पहला प्रश्न संतों और स्थानों के गलत मिलानों की पहचान पर आधारित है, जबकि दूसरा और तीसरा प्रश्न प्रमुख संतों और उनके शिष्यों के संबंध पर केंद्रित है। यह अध्याय विभिन्न संतों और लोक देवताओं के उनके संबंधित क्षेत्रों और संप्रदायों से मुख्य संबंधों को शामिल करता है, जिसमें रामदेवजी, मल्लीनाथजी और दया बाई जैसे महत्वपूर्ण व्यक्तित्वों पर जोर दिया गया है। इसमें पाठ्य सामग्री को सरल और स्पष्ट रूप से प्रस्तुत किया गया है ताकि छात्रों को आसानी से समझ आ सके।

राजस्थान का भक्ति आन्दोलन

- भक्ति आंदोलन छठी(6^{th}) शताब्दी में दक्षिण भारत में शुरू हुआ था।
- संत रामानंद ने भक्ति आंदोलन को उत्तर भारत में फैलाया। रामानंद ने अलग-अलग जातियों के 12 प्रमुख भक्तों को अपना शिष्य बनाया, जिनमें कबीर, रैदास, पीपा, धन्ना, और नाभा जैसे महान संत शामिल थे।
- इन शिष्यों में धन्ना और पीपा राजस्थान के निवासी थे,जिन्होंने राजस्थान में भक्ति आन्दोलन प्रारम्भ किया

उपासना पद्धति के आधार पर सम्प्रदायों को दो श्रेणियों में बाँटा जा सकता है।

निर्गुण भक्ति संप्रदाय	सगुण भक्ति संप्रदाय
➢ इस संप्रदाय के समर्थक ईश्वर को निराकार (निर्गुण) मानकर उसकी पूजा करते हैं।	➢ इसमें ईश्वर को साकार रूप मानकर उसकी पूजा की जाती है।
➢ प्रमुख संत - धन्ना, पीपा, दादू दयाल जी, रज्जब जी, लालदास जी, हरिदास जी, जाम्भोजी, जसनाथ जी, रामचरण जी और सूफी संत।	➢ प्रमुख संत-कृष्णदास पयहारी, अग्रदास जी, मीरा, गोविंद स्वामी आदि।

लोक संत और उनके संप्रदाय

दादूदयाल जी (दादू संप्रदाय)

- 'राजस्थान के कबीर'
- इनका जन्म फाल्गुन शुक्ल अष्टमी 1544 ई. को अहमदाबाद (गुजरात) में हुआ था। इनका बचपन का नाम महाबली था।
- इनके गुरु ब्रह्मानंद थे।
- इन्होंने मूर्ति पूजा, भेदभाव, आडंबर आदि का विरोध किया। इन्होंने निर्गुण ब्रह्म के रूप में ईश्वर की आराधना की तथा दादू ने कर्मकांड, जातिप्रथा, मूर्तिपूजा, रूढ़िवादिता आदि का घोर विरोध किया।
- उन्होंने स्थानीय भाषा में उपदेश दिए।
- 1575 ई. में दादू अपने 25 शिष्यों के साथ आमेर आए। 1585 ई. में दादू ने फतेहपुर सीकरी यात्रा की और मुगल सम्राट अकबर से मुलाकात की।
- तत्कालीन ढूंढाड़ और मारवाड़ राज्यों में भ्रमण और धर्मोपदेश करते हुए दादू 1602 ई. में फुलेरा के पास नारायणा गांव में पहुचें। यहां ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी 1603 ई. को उनका स्वर्गलोकगमन हो गया ।
- दादू का मृत शरीर उनके निर्देशानुसार 'दादू खोल' नामक स्थान पर रखा गया, जो 'भेंराना' पहाड़ी के पास स्थित था।
- दादू ने दादू पंथ की स्थापना की, जिसका पहले नाम 'ब्रह्मा संप्रदाय' और 'परब्रह्मा संप्रदाय' था।
- दादू की शिक्षाएं और विचार 'दादूजी की वाणी' और 'दादू रा दूहा' नामक पुस्तकों में मिलते हैं।
- दादू का प्रारंभिक केंद्र नरैना (या नरायणा) था, जो जयपुर के पास स्थित भैंराना पहाड़ी पर है।
- उन्होंने निपख आन्दोलन प्रारम्भ किया।
- दादू द्वारा लिखित पुस्तकें - संत गुण सागर, नाम माला, कायाबेली, परिचय का अंग आदि।
- प्रसिद्ध शिष्य थे – गरीबदास जी, रज्जबजी, संतदासजी, बखनाजी,, माधोदास जी आदि।
- दादूदयाल जी के 152 शिष्यों में से 52 शिष्य साधु थे और दादू संप्रदाय के 52 स्तंभ/थाबे कहलाते थे।
- उनकी मृत्यु के बाद दादू संप्रदाय 5 उपशाखाओं में विभाजित हो गया –

खालसा	दादूदयाल जी के बड़े पुत्र गरीबदास द्वारा प्रारम्भ की गई इस शाखा की मुख्य पीठ नारायणा (जयपुर) है।
नागा	इस सम्प्रदाय के संस्थापक सुन्दरदास जी थे।
उत्तरादे	इस शाखा के संस्थापक दादूजी के अनुयायी बनवारीदास जी थे। उन्होंने अपनी गद्दी हरियाणा के रतिया (हिसार) में स्थापित की।
विरक्त	घुमंतू दादूपंथी संत जो गृहस्थों को उपदेश देते थे, उन्हें विरक्त कहा जाता है।
खाकी	वे शरीर पर भस्म लगाते हैं, लम्बी जटा रखते हैं और खाकी वस्त्र पहनते हैं।

रज्जब जी

- रज्जब जी का जन्म सांगानेर (जयपुर) में हुआ।
- विवाह के लिए जाते समय उन्होंने दादूजी के उपदेश सुने और उनके शिष्य बन गए और जीवन भर दूल्हे के वेश में रहकर दादूजी के उपदेश सुनाए।
- लेखन - रज्जब वाणी, सर्वांगी
- इन्होंने रज्जब संप्रदाय की स्थापना की तथा उनके अनुयायियों को 'रज्जबपंथी' या 'रजबावत' कहा जाता है।

सुन्दर दास जी

- दादू दयाल के शिष्य
- जन्म - 1596 ई. दौसा में परमानन्द खण्डेलवाल के घर
- मुख्य रचनाएँ- सुन्दर विलास, सुन्दर ग्रन्थावली, ज्ञान समुद्र, सुन्दरसार ।
- राजस्थान के शंकराचार्य के नाम से भी जाने जाते हैं।

मीरा बाई (मीरा दासी संप्रदाय)

- मीरा को राजस्थान की 'राधा' भी कहा जाता है। (उनका बचपन का नाम – पेमल)
- वह 1498 ईस्वी के आसपास पाली जिले के कुड़की गांव में रतन सिंह (बाजोली के जागीरदार) के घर जन्मी थीं।
- मीरा का विवाह 1516 ईस्वी में राणा सांगा के बड़े बेटे युवराज भोजराज से हुआ था, लेकिन कुछ वर्षों बाद उनके पति के निधन के कारण वह अल्पायु में ही विधवा हो गई।
- भोजराज के भाई राणा विक्रमादित्य ने मीरा को जहर देने और उन्हें सांप से कटवाने की कोशिश की, लेकिन मीरा की भगवान श्री कृष्ण के प्रति भक्ति कभी कम नहीं हुई।
- मीरा अपने अंतिम दिनों में गुजरात के द्वारका के डाकोर स्थित रणछोड़ मंदिर गई और 1547 ई. में वह अपने गिरधर गोपाल में विलीन हो गई।
- उनकी रचनाओं में टीका राग गोविंद, रुक्मणी मंगल, गीत-गोविंद पर टीका, मीरा री गरीबी, सत्यभामा जी नु रुसनो और नरसी मेहता रो मायरो शामिल हैं।

लाल दास जी (लालदासी संप्रदाय)

- लालदास जी का जन्म धोली डूब गाँव (अलवर) में हुआ।
- लालदास जी के पिता का नाम चांदमल और माता का नाम समदा था।
- वे मेव जाति के लकड़हारे थे इसलिए मेव मुसलमान लालदासजी को पीर मानते हैं।
- मुस्लिम संत गद्दन चिश्ती से शिक्षा प्राप्त करने के बाद लालदास जी ने धोली डूब छोड़ दिया और बंधोली गांव में 'सिंह शिला' पर्वत पर एक झोपड़ी बनाई।
- समाज में प्रचलित अंधविश्वासों का विरोध किया तथा भक्ति एवं नैतिक शुद्धता पर जोर दिया।
- संत लालदास ने हिंदू एवं मुस्लिम दोनों धर्मों की अच्छाइयों को अपनाने का उपदेश दिया।
- 'लालदास की चेतावनियाँ' उनकी प्रमुख काव्य पुस्तक है।
- मृत्यु - 1648 ई. में भरतपुर के नगला गांव में। (108 वर्ष की आयु में)
- उनकी समाधि अलवर के शेरपुर में है।
- आश्विन माह की एकादशी और माघ पूर्णिमा को मेला लगता है।

चरणदास जी (चरणदासी संप्रदाय)

- जन्म – वि.स. 1760 में राजस्थान में अलवर जिले के पास देहरा में हुआ।
- बचपन का नाम – रणजीत
- पिता - मुरलीधर और माता - कुंजो देवी
- गुरु - शुकदेव मुनि
- हिंदू धर्म और इस्लाम के बीच सद्भाव में विश्वास करते थे।
- चरणदास जी ब्रह्म की सगुण और निर्गुण दोनों रूपों में आराधना करते थे।

- ज्ञातव्य है कि उसने नादिरशाह के आक्रमण की भविष्यवाणी कर दी थी।
- दयाबाई और सहजाबाई उनकी प्रमुख शिष्याएँ थीं।
- चरणदासी संप्रदाय का प्रभाव मुख्य रूप से मेवात क्षेत्र और दिल्ली में है।
- इस सम्प्रदाय के 42 नियम हैं।
- उनकी समाधि दिल्ली में स्थित है।

मावजी (निष्कलंक संप्रदाय)

- 1714 ईस्वी में साबला गांव, डूंगरपुर में जन्म।
- संत मावजी ने अपने विचारों को स्थायी और ठोस रूप देने के लिए "निष्कलंक"(निष्कलंक का अर्थ है पवित्र और बिना पाप के) नामक एक संप्रदाय की स्थापना की।
- 12 वर्ष की आयु में उन्होंने घर छोड़ दिया और माही और सोम नदियों के संगम पर एक गुफा में तपस्या करना शुरू किया।
- यहां पर माघ शुक्ल एकादशी, गुरुवार, सम्वत 1784 को उन्होंने आत्मज्ञान प्राप्त किया। उसी दिन मावजी ने "बेणेश्वर" (वेण वृन्दावन) नामक एक धाम की स्थापना की।
- बेणेश्वर धाम में माघ शुक्ल पूर्णिमा को सोम, जाखम और माही नदियों के त्रिवेणी संगम पर मेला लगता है।
- उन्होंने बिना किसी भेदभाव के सभी जाति के लोगों को अपने शिष्यों में शामिल किया। मावजी के दो शिष्य, अजी और वाजी, ने सोम और माही नदियों के संगम पर लक्ष्मी नारायण मंदिर का निर्माण किया।
- मावजी के अनुयायी उन्हें विष्णु के दसवें अवतार 'कल्कि अवतार' के रूप में मानते हैं।
- उन्होंने धोलागढ़ में एकांत में रहकर 'चोपड़ों' के रूप में पाँच बड़े ग्रंथों की रचना की, जिनकी संख्या लगभग 72 लाख 96 हजार श्लोकों की मानी जाती है। (जो दीपावली पर निकाले जाते हैं)।

संत धन्ना

- राजस्थान में धार्मिक आन्दोलन प्रारम्भ करने का श्रेय धन्ना को जाता है।
- जन्म - 1415 ई. में टोंक जिले के धुवन गांव में एक जाट परिवार में हुआ।
- धन्ना काशी गए और आचार्य रामानन्द के शिष्य बन गए।
- मंदिर- धुवां कला गांव (टोंक) और ये संत पंजाब में भी लोकप्रिय हैं।

संत पीपा

- इनका जन्म 1425 ई. में हुआ था और इनका बचपन का नाम प्रताप सिंह था।
- खींची राजपूत पीपा, गागरोन (झालावाड़) के शासक थे।
- पीपा जी ने दिल्ली के सुल्तान फ़िरोज़ शाह तुगलक के आक्रमण को विफल कर दिया था।
- बाद में पीपा काशी चले गये और रामानन्द के शिष्य बन गये।
- वे एक निर्गुण भक्ति संत थे और भक्ति को मोक्ष का सर्वोत्तम साधन मानते थे।
- उन्होंने दर्जी का पेशा अपनाया, इसलिए उनके मुख्य अनुयायी दर्जी समुदाय के लोग हैं।
- पीपा के हस्तलिखित ग्रंथों में पीपा-परची, पीपा की वाणी, साखियाँ, पद आदि प्रमुख हैं।
- 17वीं शताब्दी के एक हस्तलिखित ग्रंथ में पीपा द्वारा रचित 'चितावनी' नामक ग्रंथ भी मिला है।
- मन्दिर-बाड़मेर जिले का समदड़ी गांव।

जाम्भोजी (विश्नोई संप्रदाय)

- जन्म - 1451 ई. भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को पीपासर (नागौर) के पंवार वंशीय राजपूत परिवार में हुआ।
- पिता - लोहटजी और माता - हंसा देवी
- उनके अधिकांश अनुयायी जाट जाति से थे, जो उन्हें विष्णु का अवतार मानते थे।
- गुरु गोरखनाथ के शिष्य जाम्भोजी ने 1485 ईस्वी में समराथल (बीकानेर) में 'विश्नोई संप्रदाय' की स्थापना की।

- उन्होंने अपने अनुयायियों को 29 सिद्धांतों का पालन करने का आदेश दिया।
- इस संप्रदाय के पर्यावरण से लगाव के कारण 'जाम्भोजी' को पर्यावरण वैज्ञानिक भी कहा जाता है।
- प्रमुख ग्रंथ : जम्भ संहिता, जम्भ सागर शब्दावली, विश्नोई धर्मप्रकाश और जम्भसागर हैं।
- 1536 ई. में लालासर गांव में इनकी मृत्यु हो गई।
- इनका समाधि स्थल तालवा गांव के पास स्थित है, और इस स्थान को 'मुकाम' (बीकानेर) कहते हैं।

जसनाथ जी (जसनाथी संप्रदाय)

- जसनाथी संप्रदाय के प्रवर्तक
- जन्म- 1482 ई. कतरियासर (बीकानेर) में
- इन्हें हमीरजी ज्याणी जाट और रूपांदे का पालक पुत्र माना जाता है।
- अग्नि नृत्य इस संप्रदाय की प्रमुख विशेषता है।
- उन्होंने निराकार, निर्गुण अथवा अदृश्य ईश्वर की पूजा पर बल दिया।
- उनके चमत्कारों से प्रभावित होकर दिल्ली के सुल्तान सिकन्दर लोदी ने भी उन्हें कतरियासर के पास जमीन दी।
- 1500 ई. में जसनाथजी और जाम्भोजी की एक-दूसरे से मुलाकात हुई।
- जसनाथजी ने 1506 ई. में आश्विन शुक्ल सप्तमी को चौबीस वर्ष की अल्पायु में कतरियासर में जीवित समाधि ले ली।
- उनकी शिक्षाएँ सिंभुधड़ा और कोंडा नामक पुस्तकों में संग्रहित हैं।
- जसनाथी जाटों के प्रारंभिक अनुयायियों में हरोजी और जियोजी प्रमुख थे। लालनाथजी, चौखनाथजी तथा सवाईदासजी आदि इस सम्प्रदाय के प्रमुख संत थे।

संत राना बाई

- इन्हें 'राजस्थान की दूसरी मीरा' के नाम से भी जाना जाता है।
- उनका जन्म नागौर के हरनावा (मकराना के पास) गांव में 1504 ई. में एक जाट परिवार में हुआ था।
- पिता - रामगोपाल और माता - गंगाबाई।
- पालड़ी के संत चतुरदास की शिष्या राना बाई कृष्ण भक्त थीं।
- रानाबाई ने 66 वर्ष की आयु में 1570 ई. में फाल्गुन शुक्ल त्रयोदशी को हरनावा गांव में जीवित समाधि ले ली थी।

ख्वाजा मोईनुद्दीन चिश्ती

- जन्म - 1143 ई. संजर, ईरान में
- चिश्ती सिलसिला के ख्वाजा हजरत शेख उस्मान हारूनी के शिष्य बने।
- इल्तुतमिश के शासन काल में भारत आए और 1233 ई. में अजमेर में बस गए।
- उनकी मृत्यु अजमेर में हुई, उनकी कब्र दरगाह शरीफ के नाम से प्रसिद्ध है।
- वे राजस्थान में पृथ्वीराज तृतीय के समकालीन थे।

संत रैदास

- इनका जन्म बनारस में हुआ था, लेकिन इन्होंने कुछ समय राजस्थान में भी बिताया था।
- ये कबीर जी के समकालीन और रामानंद के प्रमुख शिष्य थे।
- इन्होंने समाज में व्याप्त आडंबर और भेदभाव का विरोध करते हुए 'निर्गुण ब्रह्म' की भक्ति का प्रचार किया।
- वे मीरा के समय चित्तौड़ आए थे।
- रैदास जी की वाणी को "रैदास की परची" कहा जाता है।
- उनकी छतरी चित्तौड़गढ़ के कुम्भश्याम मंदिर के एक कोने में स्थित है।

अन्य महत्वपूर्ण संप्रदाय

निम्बार्क संप्रदाय

- प्रवर्तक - निम्बार्कचार्य
- निम्बार्क संप्रदाय की स्थापना की
- वेदांत-परिजात्य भाष्य की रचना की
- द्वैताद्वैत का सिद्धांत प्रारंभ किया।
- मुख्य पीठ - सलेमाबाद (अजमेर)
- राजस्थान में शिष्य परशुराम देवाचार्य द्वारा स्थापित।
- इस संप्रदाय में राधा को कृष्ण की पत्नी मानते हुए युगल सरकार के रूप में पूजा की जाती है।
- इस संप्रदाय को हंस संप्रदाय, सनकादिक, द्वैतमत, परशुरामपुरी के नाम से भी जाना जाता है।

गौड़ीय संप्रदाय

- इस सम्प्रदाय के प्रवर्तक बंगाल के गौरांग महाप्रभु चैतन्य माने जाते हैं। गौड़ीय संप्रदाय के अनुयायी चैतन्य महाप्रभु की शिक्षाओं का पालन करते हैं।
- इस संप्रदाय का जयपुर, सवाई माधोपुर और करौली क्षेत्र में व्यापक प्रभाव है।
- राजस्थान में इस सम्प्रदाय के प्रमुख मंदिर गोविंददेव जी (जयपुर) एवं मदनमोहन जी (करौली) हैं।
- गोविंद देव जी का मंदिर जयपुर में सवाई जय सिंह ने बनवाया था और राजा को गोविंद देव जी का दीवान माना जाता था।
- जयपुर के राजा मानसिंह प्रथम ने वृंदावन में गोविंद देव जी का मंदिर भी बनवाया था।

वल्लभ संप्रदाय

- वल्लभ संप्रदाय के संस्थापक – वल्लभाचार्य
- मुख्य पीठ - यह राजसमंद जिले के नाथद्वारा में स्थित है।
- इसमें सात प्रकार के दर्शन होते हैं - मंगला, ग्वाल, राजभोग, उत्थापन, भोग, आरती और शयन
- वल्लभ संप्रदाय के कुल 41 मंदिरों में से 7 प्रमुख केंद्र/मंदिर राजस्थान में स्थित हैं -
  I. मथुरेश जी (कोटा)
  II. श्रीनाथजी (नाथद्वारा)
  III. द्वारकाधीश (कांकरोली, राजसमंद)
  IV. गोकुल चन्द्र (कामां, भरतपुर)
  V. मदन-मोहन (कामां, भरतपुर)

रामानंदी संप्रदाय

- रामानंद जी को उत्तर भारत में भक्ति आंदोलन के प्रवर्तक के रूप में जाना जाता है।
- यह संप्रदाय भगवान श्रीराम की पूजा 'रसिक-नायक' के रूप में करता है।
- रसिक नायक - यह भगवान श्रीराम के स्नेहपूर्ण और प्रेममयी रूप का प्रतीक है, इसी कारण इस संप्रदाय को "रसिक संप्रदाय" भी कहा जाता है।
- रामानंदी संप्रदाय जयपुर में सवाई जय सिंह के शासनकाल में लोकप्रिय हुआ तथा उनके दरबारी कवि कृष्ण भट्ट ने "राम-रासो" नामक ग्रन्थ की रचना की।
- इस संप्रदाय के राजस्थान में 2 प्रमुख केंद्र हैं:
  - ✓ मुख्य पीठ - गलता जी (जयपुर) — संस्थापक: कृष्णदास पयहारी, जिसे जयपुर की दूसरी काशी या बनारस भी कहा जाता है।
  - ✓ उप पीठ - रैवासा (सीकर)

रामस्नेही संप्रदाय

- दर्शनशास्त्र :- इनके अनुयायी मूर्ति पूजा नहीं करते है, रामस्नेही में राम शब्द का अर्थ राजा दशरथ के पुत्र राम से नहीं है, बल्कि यह निराकार, अनिश्चित भगवान (निर्गुण भक्ति) को संदर्भित करता है।
- साधु-संत गुलाबी वस्त्र पहनते हैं और चैत्र माह में होली के अगले दिन 'फूलडोल उत्सव' मनाया जाता है।
- 4 प्रमुख केंद्र हैं -
  - ✓ शाहपुरा(भीलवाड़ा)
    - स्थापना- संत रामचरण दास जी
    - स्वामी कृपाराम जी के शिष्य और उन्होंने अपनी अधिकांश शिक्षा दांतड़ा (भीलवाड़ा) में ग्रहण की।
    - मूर्ति पूजा, बहुदेववादी कर्मकांडों का विरोध किया और एकेश्वरवाद में विश्वास किया।
    - विरोध का सामना करने पर, उन्हें शाहपुरा जाना पड़ा और राजा रण सिंह ने उनके लिए एक कब्रिस्तान बनवाया और एक मठ की स्थापना की।
    - उनकी शिक्षाएँ " अणभै वाणी" पाठ में संकलित हैं।
  - ✓ रेण (नागौर) - दारियाव जी, जो एक पठान परिवार से थे।
  - ✓ सींथल (बीकानेर) - संस्थापक - हरिरामदास जी, जिन्होंने 'निशानी' नामक ग्रंथ लिखा।
  - ✓ खेडापा (जोधपुर) - संस्थापक - संत रामदास जी

नोट - रामचरण जी:

- जन्म - माघ शुक्ल चतुर्दशी 1719 ईस्वी में, जयपुर राज्य के सोडा गांव में वैश्य कूल में हुआ।
- पिता - बख्तराम और माता – देऊ जी
- रामचरण का असली नाम रामकिशन था।
- शाहपुरा के राजा रणसिंह ने उनके ठहरने के लिए एक छतरी बनवाई और उनके लिए एक मठ स्थापित किया।
- राम के नाम का स्मरण करते हुए उनका 1798 ईस्वी में शाहपुरा में निधन हो गया।
- उनके आध्यात्मिक उपदेशों को "अनुभव वाणी" नामक ग्रंथ में संकलित किया गया।
- रामचरण जी द्वारा प्रचारित संप्रदाय को 'रामस्नेही संप्रदाय' के नाम से जाना जाता

नाथ संप्रदाय

- यह शैववाद का एक उप-संप्रदाय है, जिसकी स्थापना नाथ मुनि ने की थी।
- जोधपुर के राजा मानसिंह नाथ संप्रदाय के अनुयायी थे और उन्होंने आयास देवनाथ को अपने आध्यात्मिक गुरु बनाया |
- राजस्थान में नाथ संप्रदाय की दो प्रमुख शाखाएँ हैं:
  a. मान-पंथी (महामंदिर, जोधपुर)
  b. वैराग-पंथी (रताडुंगा, पुष्कर) - प्रथम प्रचारक: भर्तृहरि

अन्य संप्रदाय

नवल संप्रदाय	प्रवर्तक - नवलदास जी मुख्य पीठ - जोधपुर
चरणदासी संप्रदाय	प्रवर्तक - संत चरणदास मुख्य पीठ - दिल्ली

अलखिया संप्रदाय	प्रवर्तक - साधु लाल गिरी मुख्य पीठ - बीकानेर मुख्य ग्रंथ - अलख स्तुति प्रकाश
आजीविका संप्रदाय	स्थापना - मक्खलि गौशाला (गोशालक) यह संप्रदाय भाग्य की अपरिवर्तनीयता में विश्वास रखता है।
परणामी संप्रदाय	संस्थापक - प्राणनाथ मुख्य पीठ - पन्ना (मध्य प्रदेश) प्रार्थना - निर्गुण रूप में कृष्ण की भक्ति राजस्थान में - आदर्श नगर (जयपुर) में कृष्ण मंदिर उपदेशों का संग्रह - कुलजम स्वरूप ग्रंथ में

राजस्थान के लोक देवता

लोक देवता

- इस्लामी संस्कृति के प्रभाव तथा रूढ़िवादिता तथा अमर्यादासे बने वातावरण में प्रबुद्ध संतों के विचार मन्दिरों तथा मूर्तियों की अपेक्षा ध्यान तथा नाम-स्मरण की ओर प्रवाहित होने लगे।
- उन्होंने पारंपरिक मंदिरों और मूर्तियों के बजाय ध्यान और नाम-जप पर जोर दिया।
- इसी काल में राजस्थान में कुछ ऐसे महान व्यक्तियों का जन्म हुआ, जिन्होंने अपने आचरण और दृढ़ संकल्प से समाज को नई राह दिखाई।

कई लोक देवताओं में से, पांच महान देवता जिन्हें पंच पीर कहा जाता है, जिनकी पूजा पूरे राजस्थान में की जाती है, वे हैं - गोगा जी, पाबू जी, मेहाजी मांगलिया, हरभू जी (हड़बू जी), रामदेव जी |

गोगाजी 	➢ इनका जन्म विक्रम संवत 1003 में चूरू के ददरेवा में हुआ था। ➢ पिता - ज़ेवर सिंह तथा माता - बाछल देवी तथा पत्नी का नाम - केलम दे ➢ इन्हें गोरखनाथ एवं महमूद गजनवी का समकालीन माना जाता है। ➢ गोगाजी के जन्म स्थान ददेरवा को शीर्ष मेड़ी तथा उनके स्मारक को धुरमेड़ी कहा जाता है। ➢ भाद्रपद कृष्ण नवमी को गोगामेड़ी (हनुमानगढ़) में "गोगानवमी" के रूप में मनाया जाता है। ➢ गोगाजी के मंदिरों को "मेडी" कहा जाता है, जिस पर "बिस्मिल्लाह" लिखा होता है। ➢ हिंदू उन्हें "नागराज" के रूप में पूजते हैं, जबकि मुस्लिम उन्हें "गोगापीर" के रूप में मानते हैं। ➢ गोगाजी का अपने चचेरे भाइयों अर्जन-सुरजन के साथ भीषण युद्ध हुआ था। गोगाजी का महमूद गजनवी से 1024 ईस्वी में युद्ध हुआ था। ➢ महमूद गजनवी ने गोगाजी को "जाहर पीर" का उपाधि दिया था। यह मान्यता है कि गोगाजी को "जाहर पीर" के रूप में पूजा करने से सांप के विष का प्रभाव निष्क्रिय हो जाता है।
पाबू जी	➢ जन्म 1239 ई. में कोलूमंड (जोधपुर) में हुआ। ➢ पिता - धांधलजी राठौड़ और माता - कमला दे ➢ पाबूजी का विवाह अमरकोट के सूरजमल सोढ़ा की पुत्री सुप्यार सोढ़ी(फूलवंती) से हुआ था।

	➢ इन्हें ऊँटों का देवता, गौरक्षक, प्लेग रक्षक देवता आदि उपनामों से भी जाना जाता है। ➢ पाबूजी के 5 साथी थे – चंदोजी, सावंतजी, देमाजी, हरमल राइका जी, और सालजी सोलंकी ➢ मुख्य पूजा स्थल कोलू (फलोदी) में है। ➢ इनका प्रतीक- हाथ में भाला लिये घुड़सवार के रूप में प्रचलित है। ➢ पाबूजी को ऊँटों के देवता के रूप में पूजा जाता है। ➢ वे देवली चारणी की गायों की रक्षा करते हुए जिंदराम खींची से लड़ते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। ➢ मारवाड़ में सबसे पहले ऊँट लाने का श्रेय पाबूजी को है। रेबारी (राइका) जाति के लोग उन्हें ऊँटों के रक्षक देवता के रूप में पूजते हैं। ➢ 'पाबूजी की फड़' को नायक जाति के भोपों द्वारा गाया जाता है। ➢ आशिया मोडजी द्वारा लिखित पाबू प्रकाश पाबूजी के जीवन से संबंधित है ➢ उन्हें लक्ष्मणजी का अवतार माना जाता है।
रामदेव जी 	➢ बाड़मेर जिले की शिव तहसील के उंडूकासमेर गांव में 1405 ई. में जन्मे। ➢ वे तंवर वंश के अजमलजी के पुत्र हैं और उनकी माता मैणादे थीं। ➢ अन्य नाम - पीरों के पीर, राम सा पीर, कृष्ण के अवतार, रुणेचा-रा-धणी, हाथ का हजूर आदि। ➢ इनका विवाह अमरकोट के दलजी सोढ़ा की पुत्री नेतलदे (निहाल दे) से हुआ था। ➢ वे बालीनाथ जी के शिष्य और मल्लीनाथ जी के समकालीन थे। ➢ रामदेव जी द्वारा लिखित रचना - चौबीस वाणियाँ। ➢ अपनी भतीजी को पोकरण दहेज में देने के बाद, रामदेवजी ने जैसलमेर में 'रामदेवरा' (रुणेचा) गाँव की स्थापना की। 1458 ईस्वी में, भाद्रपद शुक्ल एकादशी को उन्होंने यहाँ समाधि ली। ➢ प्रतिवर्ष भाद्रपद शुक्ल द्वितीया को यहाँ विशाल मेले का आयोजन होता है, जो सामाजिक एकता और सांप्रदायिक सद्भाव का मुख्य प्रतीक है। ➢ हिंदू इन्हें श्री कृष्ण के अवतार के रूप में पूजते हैं, जबकि मुस्लिम रामदेवजी को 'रामसा पीर' के रूप में मानते हैं। ➢ रामदेवजी का प्रतीक 'पगलिए' (पैरों के निशान) पूजा जाता है। ये पगलिए (पैरों के निशान) गाँवों में एक ऊँचे मंच पर, एक पेड़ के नीचे स्थापित किए जाते हैं और इन स्थानों को 'थान' कहा जाता है। ➢ रामदेवजी के मंदिरों (देवरा) में जो 5 रंगों का ध्वज लगाया जाता है, उसे 'नेजा' कहा जाता है। ➢ रात्रि जागरण को 'जम्मा' कहा जाता है। ➢ रामदेवजी के मेघवाल जाति के भक्तों को 'रखिया' कहा जाता है। ➢ कामड़ जाति के भोपे रामदेव जी की फड़ का वाचन करते समय रावणहत्था वाद्य यंत्र बजाते हैं। ➢ कामड़िया पंथ संप्रदाय (तेरहताली नृत्य करते हैं) की स्थापना रामदेवजी ने की थी। ➢ रामदेवजी के मेले में इस पंथ के अनुयायियों द्वारा तेरहताली नृत्य किया जाता है।

मेहाजी मांगलिया	➢ ये राव चूंडा के समकालीन थे। ➢ इनका जन्म क्षत्रिय परिवार में हुआ था, लेकिन उनका पालन-पोषण मांगलिया गांव में उनके ननिहाल में हुआ और इसलिए वे मेहाजी मांगलिया के नाम से प्रसिद्ध हुए। ➢ इनका जन्म बापिणी, जोधपुर में हुआ था। ➢ इनका मंदिर बापिणी (जोधपुर) में स्थित है, जहाँ भाद्रपद कृष्ण अष्टमी को मेला लगता है। ➢ ये राव रणांगदेव भाटी (जैसलमेर) से युद्ध करते हुए वीरगति को प्राप्त हुए। ➢ इनके घोड़े का नाम 'कीरड़ काबरा' था।
हरभुजी (हड़बूजी)	➢ ये भुंडेल (नागौर) के महाराजा सांखला के पुत्र थे। ➢ ये राव जोधा (1438-89 ईस्वी) के समकालीन और रामदेवजी के चचेरे भाई थे। ➢ अपने पिता की मृत्यु के बाद, उन्होंने मुंडेल छोड़कर हरभमजल में रहने लगे। ➢ यहाँ रामदेवजी की प्रेरणा से उन्होंने शस्त्रों का त्याग किया और अपने गुरु बालिनाथजी से दीक्षा ली। ➢ उन्होंने राव जोधा को मंडोर जीतने का आशीर्वाद दिया, और मंडोर जीतने के बाद जोधा ने उन्हें 'बेंगटी' गाँव दिया, इस कारण मुख्य मंदिर बेंगटी (फलौदी) में स्थित है। ➢ हरभुजी की लकड़ी की गाड़ी, जिसे 'हरभुजी की गाड़ी' कहा जाता है, पूजा जाती है।
देव नारायण जी 	➢ जन्म 1243 ई. में आसींद (भीलवाड़ा) में हुआ। ➢ देवनारायण बगड़ावत सवाई भोज एवं सेढू गुर्जर के पुत्र थे। ➢ भिनाय शासक (पैतृक विवाद) से बचाने के लिए उनकी मां सेढू उन्हें अपने मायके मालवा ले गई। ➢ इनका जयसिंह देव परमार की पुत्री पीपलदे के साथ विवाह हुआ । ➢ इनके प्रमुख अनुयायी गुर्जर हैं, जो देवजी की फड़ और देवजी तथा बगड़ावतों से संबंधित 'बगड़ावत' पद गाकर उनकी महिमा करते हैं। ➢ इनकी फड़ राज्य की सबसे लंबी एवं प्राचीन फड़ है जो 'जंतर' वाद्य यंत्र के साथ गाई जाती है। ➢ मुख्य पूजा स्थल- ➢ o आसीन्द (भीलवाड़ा), जहाँ भाद्रपद शुक्ल सप्तमी को मेला भरता है। ➢ o देवधाम जोधपुरिया (टोंक) ➢ o देवमाली (अजमेर) ➢ 2 सितम्बर, 1992 को इनके सम्मान में एक डाक टिकट भी जारी किया गया। ➢ इन्हें 'भगवान विष्णु का अवतार' माना जाता है। ➢ इन्हें 'चिकित्सा का देवता' कहा जाता है, इनके मंदिर में नीम की पत्तियां चढ़ाई जाती हैं।
मल्लीनाथ जी	➢ मल्लीनाथजी का जन्म – 1358 ई. में लूनी नदी के तट पर तिलवाड़ा (बाड़मेर) में हुआ। ➢ इनके पिता मारवाड़ के रावल सलखा तथा माता का नाम जानिदे था। ➢ चाचा कान्हड़देव की मृत्यु के पश्चात् ये 1374 ई. में महेवा के शासक बने। ➢ अपनी रानी रूपांदे की प्रेरणा से वे 1389 ई. में उगमसी भाटी के शिष्य बने और योग-साधना की शिक्षा प्राप्त की। ➢ मल्लीनाथजी ने मारवाड़ के सभी संतों को एकत्रित कर 1399 ई. में एक विशाल हरि-कीर्तन का आयोजन करवाया। उसी वर्ष चैत्र शुक्ल द्वितीया को उनका निधन हो गया। ➢ इनका मंदिर लूनी नदी के तट पर तिलवाड़ा (बाड़मेर) गांव में है।

	➢ जोधपुर के पश्चिमी परगने का नाम उन्हीं के नाम पर 'मालाणी' रखा गया। मालाणी (बाड़मेर) में आज भी इनकी बहुत मान्यता है। ➢ इन्होंने कुंडा संप्रदाय की स्थापना की।

राजस्थान के अन्य लोक देवता

वीर कल्ला जी	➢ इनका जन्म 1544 में नागौर के सामियाना गांव में हुआ था। ➢ कल्लाजी को "चार हाथों वाले लोक देवता" के रूप में जाना जाता है। ➢ उन्हें नाग के रूप में पूजा जाता है। ➢ ये अकबर के चित्तौड़ पर हमले के दौरान मेवाड़ शासक उदय सिंह की ओर से लड़ते वीर गति को प्राप्त हुए।
बाबा तल्लीनाथ	➢ जन्म- शेरगढ़, जोधपुर ➢ जब किसी व्यक्ति को कोई जहरीला जानवर काट लेता है तो उसे बाबा के स्थान पर ले जाया जाता है और उनके नाम का धागा बांधा जाता है। ➢ मुख्य पूजा स्थल पंचोटा गांव (जालौर) की पंचमुखी पहाड़ियां है।
वीर तेजाजी	➢ तेजाजी का जन्म 1073 ईस्वी में नागौर जिले के खरनाल गाँव में हुआ था। ➢ इनके पिता का नाम ताहड़ जी और माता का नाम रामकुंवारी था। ➢ इनकी मृत्यु अजमेर के सुरसुरा में हुई। इनकी पत्नी पेमलदे ने तेजाजी की मृत्यु के साथ सती हो गई। ➢ इनका मुख्य मंदिर नागौर के परबतसर में स्थित है, जिसे महाराजा अभय सिंह ने बनवाया था।
भूरिया बाबा	➢ मीणा जाति के कुल देवता ➢ इनका मंदिर सिरोही जिले में गौतेश्वर महादेव मंदिर में स्थित है।
आलम जी	➢ मुख्य मंदिर – धोरिमन्ना (बारमेर) ➢ उन्हें घोड़े के रक्षक देवता के नाम से भी जाना जाता है। ➢ आलम जी जैतमलोत राठौड़ थे
देव बाबा	➢ देव बाबा गुर्जरों के रक्षक माने जाते हैं। ➢ इनका मंदिर भरतपुर जिले के नंगला जहाज गाँव में स्थित है।

राजस्थान की लोक देवियाँ

लोक देवता के समान लोक देवियों की भी राजस्थान में उतनी ही श्रद्धा से पूजा की जाती है।

करणी माता	➢ देशनोक, बीकानेर में चूहों की देवी , ➢ यहाँ सफेद चूहों को काबा कहा जाता है। ➢ राठौड़ वंश और चारण समाज की कुलदेवी।
जीण माता	➢ जीण माता का मंदिर पृथ्वीराज चौहान प्रथम के काल में बनाया गया था। ➢ जीण माता को चौहानों की कुलदेवी माना जाता है।
रानी सती	➢ झुंझुनू में इनका संगमरमर का मंदिर स्थित है ।
शीतला माता	➢ सेढ़ माता/महामाया माता/चेचक निवारक माता/सेढल माता के रूप में पूजी जाती है |

	➢ यह बच्चों को चेचक से बचाती है। ➢ गधा इनका वाहन है और इनके पुजारी कुम्हार जाति से होते है। ➢ मुख्य मंदिर - शील की डूंगरी, चाकसू, जयपुर में है। ➢ एकमात्र देवी जिनकी खंडित मूर्ति की पूजा की जाती है।
नारायणी माता	➢ इनका मंदिर बरवा डूंगरी, राजगढ़, अलवर में स्थित है। ➢ नाई जाति इसे अपनी कुलदेवी मानती है।
आशापुरा माता	➢ इन्हें हिंगलाज माता का अवतार माना जाता है। ➢ ये चौहान वंश की कुलदेवी मानी जाती हैं। ➢ शाकंभरी (सांभर), चामुंडा (अजयमेनरू मेरवाड़ा), और आशापुरा (नाडौल) प्रसिद्ध मंदिर हैं।
स्वांगिया/सांगियाजी/सुग्गा माता	➢ जैसलमेर का राज्य चिह्न स्वांग (माला) देवी द्वारा दिया गया था, इसलिए यहाँ देवी को स्वांगिया देवी कहा जाता है। ➢ इन्हें जैसलमेर के भाटी शासकों की कुलदेवी माना जाता है।
जमवाई माता	➢ कछवाहा राजपूतों की कुलदेवी मानी जाती हैं। ➢ इनका प्रसिद्ध मंदिर जमवारामगढ़ (जयपुर) में स्थित है।
ज्वाला माता	➢ ये जोबनेर के खंगारोत राजवंश की कुलदेवी हैं। ➢ इनका प्रसिद्ध मंदिर जोबनेर (जयपुर) में स्थित है।
सच्चियाय माता	➢ वह ओसवालों की कुलदेवी हैं। ➢ प्रसिद्ध मन्दिर ओसियां (जोधपुर) में स्थित है। ➢ इस मंदिर का निर्माण 11वीं सदी में परमार राजकुमार उपलदेव ने प्रतिहार शैली में कराया था।
नागणेची माता	➢ नागणेची माता राठौड़ राजवंश (जोधपुर) की कुलदेवी है। ➢ 18 भुजाधारी देवी नागणेची माता का मन्दिर मंडोर (जोधपुर) में है।
दधिमति माता	➢ इनका मंदिर नागौर जिले की जायल तहसील के गोट मांगलोद में स्थित है। (कुशक्षेत्र) ➢ दधिमती माता दधीच ब्राह्मणों की कुलदेवी हैं।
ब्राह्मणी माता	➢ ये मिट्टी के बर्तन बनाने वाले / कुम्हार जाति की कुलदेवी मानी जाती हैं। ➢ यहाँ माघ शुक्ला सप्तमी को गधों का मेला आयोजित होता है। ➢ प्रसिद्ध मंदिर सोरसेन (बारां) में स्थित है। ➢ यह एकमात्र मंदिर है जहाँ देवी की पीठ की पूजा की जाती है।
कुशाल माता	➢ इनका मंदिर बदनोर (भीलवाड़ा) में स्थित है। ➢ इस मंदिर का निर्माण महाराणा कुम्भा ने 1490 ईस्वी में मालवा विजय की स्मृति में कराया था।
त्रिपुरा सुन्दरी	➢ इनका मंदिर तालवाड़ा गाँव (बांसवाड़ा) में स्थित है।
तनोट माता	➢ इनका मंदिर जैसलमेर जिले में स्थित है, जो पाकिस्तान की सीमा के पास है, जहाँ 1971 भारत-पाकिस्तान युद्ध के दौरान लोंगेवाला युद्ध हुआ था। ➢ सीमा सुरक्षा बल (BSF) के सैनिक इस देवी की पूजा करते हैं।
सुगाली माता	➢ आउवा (पाली) के ठाकुर कुशाल सिंह चम्पावत की इष्ट देवी । ➢ सुगाली माता को 1857 के विद्रोह की देवी भी कहा जाता है।

	➢ सुगाली माता की मूर्ति वर्तमान में पाली के बांगड़ संग्रहालय में रखी हुई है, पहले यह मूर्ति अजमेर के राजपूताना संग्रहालय में थी।
आशावरी माता/आवरी माता	➢ इनका मंदिर निकुंभ गाँव, चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित है। ➢ आवरी माता को शारीरिक रोगों (जैसे लकवा) के निवारण के लिए प्रसिद्ध है।
बाण माता	➢ इनका मंदिर केलवाड़ा चित्तौड़गढ़ में स्थित है। ➢ ये मेवाड़ और सिसौदिया राजवंश के शासकों की कुलदेवी हैं।

Toppersnotes
Unleash the topper in you